INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES
Peer Review, Refereed, Biannual, Multiple Language (Hindi & English), Social Science Journal, Open Access Journal
ISSN: 3107-5096(ONLINE)
VOL. 1, ISSUE 2 (DECEMBER)2025

भारतीय महाकाव्य और नैतिक संचार

***डा० कमल शर्मा**
सहायक आचार्य
योग विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
Doi: https://doi.org/10.5281/zenodo.17627875
PP:94-101

ARTICLE INFO
Received:11-08-2025
Revised:19-09-2025
Accepted: 10-11-2025
Published:01-12-2025

शोध सारांश

भारतीय ज्ञान प्रणाली जो महाकाव्यों के माध्यम से हमारे पास संकलित हैं, विश्व भर में अद्वितीय है। यह ज्ञान न केवल वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से उन्नत है, बल्कि यह धार्मिक आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्याधिक मूल्यवान है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में छिपे ज्ञान ने आज के युग में भी हमें नयी दिशा दिखाने में मदद की है।

हमारे पूर्वजों ने अनगिनत शास्त्रों एवं धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से ज्ञान का आदान–प्रदान किया है। यही कारण है कि हमारे ग्रंथों और शास्त्रों का ज्ञान आज भी समृद्धि और समाधान का स्त्रोत है, विश्व को ज्ञान की अनमोल धारा से संपन्न करने के लिए भारतीय साहित्य ने हमेशा प्रेरित किया है।

हमारे देश में नैतिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए हमारे प्राचीन ग्रंथ हमें आदर्शवाद का रूप प्रस्तुत करते हैं। रामायण, महाभारत, वेद, पुराण आदि ग्रंथों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्यों, नैतिकता के सिद्धांत और समाज में शांति और सद्भावना की महत्त्वपूर्ण भूमिका को समझाने का प्रयास किया है।

हमारे देश में हजारों शताब्दियों के बाद भी, कई विदेशी शासकों द्वारा हमारी संस्कृति को समाप्त करने के प्रयास के बाद भी भारतीय संस्कृति, नैतिकता और आध्यात्मिक ज्ञान को जीवित रखा जा सका क्योंकि हमारे समाज का नेतृत्व केवल राजाओं और योद्धाओं की भौतिक शक्तियों द्वारा ही नियंत्रित नहीं किया गया बल्कि राजाओं की भौतिक शक्ति के साथ उनके कुलगुरुओं, विद्वानों और विचारकों द्वारा उनका मार्गदर्शन किया जाता रहा है, जिनके पास आध्यात्मिकता और नैतिकता का ज्ञान था। इन विद्वानों ने न केवल शक्ति और अधिकार वाले लोगों का सम्मान अर्जित किया बल्कि समाज को भी नैतिकता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

ये गुरु प्राचीन भारतीय संस्कृति और नैतिकता के ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए गुरुकुल का संचालन करते थे। जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग को शास्त्रों की शिक्षा के साथ साथ शस्त्र का ज्ञान भी देते थे। इन गुरुकुल के माध्यम से ही समाज में धार्मिक

और नैतिक मूल्यों को बनाए रखने का कार्य किया गया है। इन्हीं के द्वारा हमारे प्राचीन ग्रंथों एवं ज्ञान को आगे बढ़ाने का कार्य किया गया है।

मुख्य शब्द – नैतिक मूल्य, मनुष्यत्व, महाकाव्य, छंद, श्लोक

प्रस्तावना

हम सभी अपने–अपने जीवन में नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं नैतिकता हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जब से मनुष्य ने सामाजिक जीवन में जीना प्रारंभ किया है नैतिकता के नियम ही हमें मनुष्यत्व का रूप प्रदान करते हैं इन सिद्धांतों में आपसी भाईचारा दया ईमानदारी सत्य बोलना चोरी ना करना आदि हैं ।

यदि हम नैतिकता के ऊपर विचार करें तो हम देखते हैं की एक स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए नैतिकता एक महत्वपूर्ण विषय है। नैतिकता हमें सिखाती है कि समाज में रहते हुए हमें उन मूल्यों का पालन करना आवश्यक है जिससे हम अपने साथ–साथ दूसरों के अधिकारों का भी सम्मान करते हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली में कई ऐसे साहित्य संकलित हैं जिसमें विभिन्न कहानियों के माध्यम से हमें जीवन के नैतिक मूल्यों का ज्ञान दिया गया यह ग्रंथ महाकाव्य के रूप में हैं।

हमारे प्राचीन ग्रंथों का संकलन महाकाव्य के रूप में है जिसमें श्लोकों, दोहे, छंदों आदि के द्वारा बहुत बड़े विषय को थोड़े से शब्दों में संकलित करके हमारे सामने प्रस्तुत किया गया इन दोहों में छंदों में एक लय थी जिससे इन्हें पढने में आसानी हुई एक गुरु द्वारा अपने शिष्यों को इन्हें याद करने में आसानी हुई और बहुत थोड़े वाक्यों द्वारा एक बहुत बड़े विषय को उन्होंने संकलित करके आगे आने वाली पीढ़ी के लिए ज्ञान का एक संग्रह प्रस्तुत किया।

परिचय

महाकाव्यों में एक आदर्श के रूप में मुख्य पात्र दर्शाया गया जो अपने जीवन में अपनी निजी खुशियों का त्याग करके भी नैतिकता का पालन करते हुए अपने जीवन को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है जो समाज के लिए अनुकरणीय है। जब छोटे बच्चों को इस प्रकार की आदर्शवादी कहानियां सुनाते या पढ़ाते हैं तो बच्चे उन ग्रंथों के पात्रों को अपने जीवन से जोड़कर देखने लगते हैं। इन ग्रंथों के नायक को हम अपने जीवन का आदर्श मानने लगते हैं। बचपन में जो सिद्धांत हम अपना लेते हैं वो आजीवन हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

जब हम एक अच्छे समाज की परिकल्पना करते हैं तो उसमें सभी का सहयोग, सभी व्यक्तियों द्वारा नियमों का पालन करना एवं अपने अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाना आवश्यक है यदि हम अपने निजी स्वार्थ के हितार्थ कार्य करते रहेंगे तो हम कुछ ऐसी गलतियां भी करते हैं जिससे दूसरे व्यक्तियों के अधिकारों का

हनन भी हो सकता है। इसीलिए नैतिकता को समाज का, अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है जिसके लिए हमारे प्राचीन ग्रंथों ने बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

साहित्य सर्वेक्षण

रामायण महाकाव्य प्राचीन भारतीय सामाजिक संबंधों में एक आदर्श व्यक्ति की नैतिकता जिम्मेदारी और दायित्वों के पहलू पर केंद्रित है।

जातीयता और कला के मूल्यों के साथ इस महाकाव्य का दुनिया भर के देशों की संस्कृति और साहित्य पर कई अलग–अलग तरीकों से गहरा प्रभाव है विशेष कर दक्षिण पूर्व एशिया के देशों पर।

कला और भारत की हिंदू जातीय अवधारणाओं के बीच संबंधों की पुष्टि रामाश्रय शर्मा ने रामायण महाकाव्य अध्ययन में राजनीतिक और सामाजिक परिपेक्ष से की है, जो इस बात पर जोर देता है कि आदर्श सामाजिक जीवन में आदर्श नैतिकता एक ऐसा कारक है जो कथा संरचना और कलात्मक मूल्य बनाता है।(शर्मा 1971, पृ 149)।

केट मिलनर रब्ब ने राष्ट्रीय महाकाव्य में पुष्टि की कि रामायण महाकाव्य में हिंदू हठधर्मिता से जुड़े जातीय मूल्यों ने काम के लिए सच्चे मूल्यों का निर्माण किया है और भारतीयों के दिमाग में गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव डाला है। यह वह महाकाव्य है जो ष्उस विश्वास को संरक्षित करता है जिसके बारे में कोई भी सुनता है पढ़ता है तो बुरे पापों से मुक्त हो जाता हैष।(फूंग ची, 2011, पी 19)। रोमेश सी दत्त ने रामायण महाकाव्य के अंग्रेजी अनुवाद में उन स्थितियों और घटनाओं के माध्यम से महाकाव्य के पात्रों की अत्यधिक प्रशंसा की है जिनमें हिंदू नैतिक मानकों के अनुसार योग्यताएं व्यक्त की गई हैं।(दत्त 2005, पृ 134)।

वियतनाम में रामायण महाकाव्य का अध्ययन कई अलग–अलग पहलू में किया जाता है जैसे कि दर्शन, सौंदर्य शास्त्र और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की संस्कृति और साहित्य पर इसका प्रभाव आदि। विभिन्न शोध दृष्टिकोणों के बावजूद शोधकर्ताओं ने इस बात की पुष्टि करने पर ध्यान केंद्रित किया है कि इस कार्य का मूल्य अद्वितीय कलात्मक रणनीति के माध्यम से काम में वीर पत्रों की जीवित इच्छा के साथ जातीय सौंदर्य संबंधी अवधारणाओं, आदर्श गुणों द्वारा लंबे समय तक चलने वाली जीवन शक्ति और गहरा प्रभाव है। तुलनात्मक साहित्य विभाग में व्याख्याता डॉक्टर अनिंदिता बेंजी के शोध कार्यों में से एक का परिचय देते हैं जिसका शीर्षक है द हाई क्लास स्टोरीटेलिंग अंडर द फायररू एपिक इन इंडियन समकालीन मीडिया जो भारतीय संस्कृति और साहित्यिक जीवन में योगदान के साथ रामायण महाकाव्य का अध्ययन कर रहे हैं।(वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी,2009, पृ 351–363)

अध्ययन की प्रणाली

भारतीय ज्ञान प्रणाली जो महाकाव्य के माध्यम से हमारे पास संकलित है विश्व भर में अद्वितीय है यह ज्ञान न केवल वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से उन्नत है बल्कि यह धार्मिक आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्याधिक मूल्यवान है पुरातात्विक ग्रंथों में दिए हुए ज्ञान ने आज के युग में भी हमें नहीं दिशाएं दिखाने में मदद की है।

हमारे पूर्वजों ने अनगिनत शास्त्रों, विज्ञान एवं धार्मिक ग्रंथो के माध्यम से ज्ञान का आदान–प्रदान किया है यही कारण है कि हमारे ग्रंथों और शास्त्रों का ज्ञान आज भी समृद्धि और समाधान का स्रोत है विश्व को ज्ञान की अनमोल धारा से संपन्न करने के लिए भारतीय साहित्य ने हमेशा प्रेरित किया है। हमारे देश में नैतिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए हमारे प्राचीन ग्रंथ हमें आदर्शवाद का रूप प्रस्तुत करते हैं महाभारत रामायण वेद पुराण आदि ग्रंथों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्य नैतिकता के सिद्धांत और समाज में शांति और सद्भावना की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने का प्रयास किया है। हमारे देश में हजारों शताब्दियों के बाद भी, कई विदेशी शासकों द्वारा हमारे संस्कृति को समाप्त करने के प्रयास के बाद भी भारतीय संस्कृति नैतिकता और आध्यात्मिक ज्ञान को जीवित रखा जा सका क्योंकि हमारे समाज का नेतृत्व राजाओं और योद्धाओं की भौतिक शक्तियों द्वारा ही नियंत्रित नहीं की जाती थीं बल्कि राजाओं की भौतिक शक्ति के साथ उनके कुलगुरुओं, विद्वानों और विचारों द्वारा उनका मार्गदर्शन किया जाता था जिनके पास आध्यात्मिकता और नैतिकता का ज्ञान था उन्होंने उन शासकों का मार्गदर्शन भी किया और समाज को नैतिकता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित भी किया।

यह विद्वान, विचारक गुरु के रूप में राज्य से बाहर निर्जन स्थान पर गुरुकुल का संचालन करके समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षा देने का कार्य करते थे जिसमें शास्त्रों के ज्ञान के साथ–साथ शस्त्रों का ज्ञान भी दिया जाता था इन गुरुकुलों के माध्यम से ही समाज में धार्मिक और नैतिक शिक्षा को आगे बढ़ने का कार्य किया गया।

भारतीय साहित्य विश्व के प्राचीनतम साहित्यों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि दुनिया में साहित्य की पहली कृति ऋग्वेद सबसे पुरानी भारतीय भाषाओं में से एक संस्कृत में लिखी गई थी। यह एक अच्छी तरह से विकसित भाषाओं में से एक थी जब वर्तमान समय की कई लोकप्रिय भाषा अपने प्रारंभिक रूप में भी अस्तित्व में नहीं आई थी भारत के साहित्य की प्रारंभिक कृतियां महाकाव्य लंबी कविताएं नाटक आदि संग्रह थी जो पद्य में लिखी गई थी पहले शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान बड़ी संख्या में महान भारतीय महाकाव्यों की रचना की गई। जिनमें से मुख्य रुप से कुछ ग्रंथ इस प्रकार हैं –

महाभारत को दुनिया का सबसे लंबा महाकाव्य माना जाता है। माना जाता है कि महाभारत एक

संस्कृत महाकाव्य है जिसे ऋषि वेदव्यास ने लिखा था। ऋषि वेदव्यास ने ही प्राचीन वेदों को चार भागों में विभाजित किया था जिसका उद्देश्य आम लोगों को वेदों के आवश्यक दर्शनों को समझाना था महाभारत में 18 पर्व (खंडों) में एक लाख से अधिक श्लोक (दोहे) हैं। यह महान कृति वृहत् भारत में चचेरे भाइयों के दो समूह कौरवों और पांडवों के बीच सत्ता संघर्ष को दर्शाती है।

महाभारत के नैतिक सिद्धांत –

नंबर 1– आप नियमों के अनुसार तभी चल सकते हैं जब दूसरा पक्ष भी नियम के अनुसार कार्य कर रहा हो।

नंबर 2– जीतने के लिए जितने महत्वपूर्ण हथियार और शारीरिक बल हैं उससे अधिक आपका सूचना तंत्र प्रबल होना चाहिए श्री कृष्ण द्वारा विभिन्न सूचनाएं और जानकारियां पांडवों को समय–समय पर दी जाती रही जिससे युद्ध जीतने के लिए उचित रणनीति बना सकें।

नंबर 3– यदि मित्र गलत है तो उसका सही मार्गदर्शन करना उसे सही दिशा में ले जाना यह भी हमारा कर्तव्य होना चाहिए।

नंबर 4– अपनी इच्छाओं को नियंत्रित रखना हमें अपनी इच्छाओं को इतना ही बढ़ाना चाहिए जहां तक हम नैतिकता के साथ उन इच्छाओं की पूर्ति कर सके जब हमारी इच्छा नैतिकता के बाहर हो जाती है तो परिवार एवं समाज के लिए नुकसानदायक हो सकती हैं।

रामायण भारत का सबसे प्राचीन महाकाव्य है रामायण का अर्थ है राम की यात्रा रामायण महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखी गई थी जो एक शिकारी से ऋषि बने थे वह संस्कृत के पहले कवि थे यह महाकाव्य भगवान राम की कथा बताता है जो मानव रूप में भगवान विष्णु के अवतार थे राम मर्यादा पुरुषोत्तम (पृथ्वी पर सबसे धार्मिक व्यक्ति) थे और प्रजा एवं राज्य की मर्यादा एवं सुशासन के लिए उन्होंने अपनी सारी खुशियों को त्याग दिया था।

रामायण में नैतिक सिद्धांत –श्री राम, सीता माता, लक्ष्मण जी, भरत जी सभी ने नैतिकता का एक आदर्श प्रस्तुत किया उन्होंने अपने अपने जीवन में परिवार भाई पिता और अपने राज्य के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए आदर्श और नैतिकता का सबसे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने निजी जीवन में कोई ऐसा कार्य नहीं किया जो आदर्श व्यक्ति को नहीं करना चाहिए इनका पूरा जीवन आदर्शवाद की प्रतिमूर्ति के रूप में रहा इन्होंने कष्ट सहे लेकिन आदर्श और नैतिकता को कभी नहीं छोड़ा।

भगवत गीता– भगवत गीता महाभारत का ही एक भाग है जिसमें श्री कृष्ण ने अर्जुन को उस समय ज्ञान दिया जब कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन अपने विपक्ष में अपने ही बन्धु –बांधवों, भाइयों को देखकर युद्ध से विमुख हो गया। उस समय श्री कृष्ण जी द्वारा अर्जुन को अपने उपदेश में यह ज्ञान दिया गया कि नैतिकता के अनुसार युद्ध उचित नहीं है लेकिन धर्म की स्थापना के लिए कभी–कभी यह आवश्यक हो जाता है।

यदि बलवान युद्ध से मुंह मोड़ लेते हैं तो समाज में शांति और सद्भावना की व्यवस्था कैसे स्थापित होगी। अतः एक सभ्य समाज की स्थापना के लिए युद्ध भी आवश्यक हो जाता है।

हमारे अधिकांश ग्रंथों में नैतिकता एवं आदर्शवाद का पाठ पढ़ाया गया है। महर्षि पतंजलि द्वारा रचित पातंजल योग सूत्र के अष्टांग योग में प्रथम अंग यम है जिसके अंतर्गत सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह को योग का महत्वपूर्ण अंग माना है। ये वो सिद्धांत हैं जिनका पालन करने से मनुष्य आदर्शवाद एवं नैतिकता का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है।

हमारे ग्रंथो में जहां नैतिकता के पाठ के रूप में पात्रों ने अपने जीवन का सर्वस्व त्याग कर दिया लेकिन दूसरों के अधिकारों का हनन नहीं होने दिया वही भगवत गीता में यह संदेश भी दिया गया है कि यदि आपको समाज में शांति और व्यवस्था बनाए रखनी है तो कभी–कभी युद्ध भी आवश्यक हो जाता है। यह भी नैतिकता का ही एक भाग है सुशासन के लिए समाज के आदर्शों को बनाए रखने के लिए कभी–कभी आपको हथियार भी उठाने पड़ेंगे, संघर्ष भी करना पड़ेगा तभी आप समाज में नैतिकता और आदर्शवाद को स्थापित कर सकते हैं

हम सभी अपने–अपने जीवन में नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं हम विभिन्न स्थानों और क्षेत्रों से संबंधित विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों का प्रतिनिधित्व करते हैं मूल रूप से हम जीवन में कई सिद्धांतों का पालन करते हैं जो प्रकृति में बहुत कुछ समान हैं जैसे भाईचारा, दया, ईमानदारी, सत्य निष्ठा आदि। यदि हम इस बात पर विचार करें कि यह सिद्धांत हमारे अंदर कब प्रविष्ट हुए तो हम देखते हैं कि यह मूल्य हमारे अंदर तब बोए गए थे जब हम बच्चे थे। जिन मूल्यों को हम सबसे अधिक संजोते हैं वह कहानियों के माध्यम से सिखाए जाते हैं। हमारे भीतर ठोस रूप से अंतर्निहित मूल्य हमारे कुछ पसंदीदा पात्रों से दृढ़ता से जुड़े हुए हैं जिन्होंने अपने समय में जीवन में सबसे कठिन समय में भी समान आदर्श को बनाए रखा था। कभी किसी समय में जब कहानियां जैसी कुछ परिस्थितियों हमारे जीवन में सामने आती हैं तो हमने अनजाने में उन पात्रों से ताकत मांगी जो हमारे आदर्श रहे थे और अपनी समस्याओं से आसानी से बाहर निकल सके जो हमें बहुत कठिन लग रही थीं। आदर्शवाद और नैतिकता हमारे अंदर दृढ़ता और विश्वास पैदा करते हैं। जो हमारे जीवन में किसी भी समस्या से बाहर निकलने में हमारी बहुत मदद करते हैं यद्यपि नैतिकता और आदर्शवाद का पालन करना बहुत सरल नहीं होता लेकिन जैसे–जैसे हम अपने मन में निश्चय कर लेते हैं तो जीवन के प्रत्येक पहलू में इसका प्रभाव दिखाई देने लगता है।

मीडिया का योगदान

प्राचीन काल में प्रारंभिक शिक्षा पद्धति के अंतर्गत हमारे गुरुकुल में गुरु शिष्यों को बोलकर ही ज्ञान दिया करते थे क्योंकि उस समय लिखित ग्रंथ नहीं थे। जो ज्ञान गुरु द्वारा शिष्यों को प्राप्त होता था बाद में उन्हीं शिष्यों में से कोई जब गुरु बन जाता था तो उस ज्ञान को अपने शिष्यों द्वारा आगे बढ़ाता था। परंतु

कालांतर में इन विषयों को लिखित रूप में संकलित करने की आवश्यकता हुई जिससे ज्ञान को संकलित किया जा सके। ताकि यदि किसी समय पर कोई पात्र शिष्य न मिलने के कारण यदि गुरु अपने ज्ञान को बोलकर आगे नहीं बढ़ा पा रहा है तो लिखित रूप में वह ज्ञान संकलित रहे।और आगे आने वाले समय में उन शिष्यों को प्राप्त हो सके जो उस ज्ञान एवं शिक्षा द्वारा समाज में एक अच्छा संदेश आगे बढ़ा सकें।

आज के समय समाज में नैतिकता एवं आदर्शवाद की स्थापना के लिए इन संदेशों को आगे बढ़ाने के लिए मीडिया का रोल बहुत महत्वपूर्ण है। हम देखते हैं की नवयुवक अपने–अपने फोन, लैपटॉप, कंप्यूटर आदि के द्वारा हर समय मीडिया से कनेक्ट रहते हैं। नवयुवकों पर मीडिया का गहन प्रभाव पड़ता है। मीडिया यदि गलत संदेश समाज में दे रहा है तो व्यक्ति इसी के अनुसार अपना आचरण अपना लेगा लेकिन यदि मीडिया द्वारा नैतिकता एवं आदर्शवाद स्थापना करने हेतु प्रयास किए जाएंगे तो समाज में वही मूल्य स्थापित होंगे। हम चाहे शहर की बात करें अथवा ग्रामीण क्षेत्र की सभी के ऊपर मीडिया का प्रभाव इस प्रकार हावी है कि मीडिया द्वारा दिखाई गई प्रत्येक बात को वह लोग सत्य मानते हैं मीडिया में जो भी तथ्य दिखाए जा रहे हैं वह हमारे नवयुवकों एवं समाज पर बहुत अधिक प्रभाव डालते हैं। अतः आज के समय में किसी भी तरह का आवश्यक ज्ञान मीडिया के द्वारा सबसे आसानी से समाज में पहुंचाया जा सकता है जिसके कारण मीडिया की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है।

निष्कर्ष

साहित्य का हमारे जीवन में एक बहुत बड़ा योगदान होता है। हमारे साहित्यों में जो कहानी दी जाती है उसमें नायक को एक ऐसे पत्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो समाज में नैतिकता और मूल्यों की स्थापना के लिए स्वयं के जीवन को भी न्योछावर कर देता है हम देखते हैं कि इन के महाकाव्यों के माध्यम से हमने ऐसे समाज की छवि प्रस्तुत की जिसमें अधिकांश पात्र अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर परिवार, समाज और देश के प्रति समर्पण के भाव से कार्य कर रहे हैं। एक आदर्शवादी राज्य स्थापित करने में प्रत्येक नागरिक का अपना अपना योगदान होता है जब भी कोई व्यक्ति निजी स्वार्थ में कार्य करता है तो वह अपने परिवार के साथ–साथ समाज और देश के लिए भी हानिकारक होता है।

हमारे पूर्वजों ने रामायण को मंचन के रूप में प्रस्तुत करके समाज के प्रत्येक व्यक्ति को एक संदेश दिया कि हमें उन पात्रों का मंचन केवल नाटक के रूप में नहीं करना है बल्कि उन आदर्शों को जिनका मंचन हम मंच पर कर रहे हैं उन्हें अपने जीवन में उतारना है। बच्चों को विभिन्न कहानियों का संग्रह क्यों बढ़ाया जाता है वह केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है बल्कि उन छोटी–छोटी कहानियों के माध्यम से उन पात्रों और कहानी के नायक के माध्यम से बच्चा यह सिखाता है कि हमें विकट परिस्थिति में भी अपने आप को नैतिकता और मूल्यों का पालन करते हुए कैसे समाज में जीना है कहानी के पात्रों पर जब विपत्ति आती है और वह उनका समाधान करते हैं तो कहानियों के माध्यम से बच्चा यह समझ जाता है कि जीवन

में आने वाली विकट परिस्थितियों से बचाव के लिए उसे भी इसी तरह से नैतिकता के साथ अपने विवेक का प्रयोग करते हुए सोच समझकर बाहर निकलना है। इस ज्ञान को एवं नैतिक मूल्यों को बनाए रखने एवं आगे बढ़ाने में मीडिया का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। मीडिया की पहुंच आज के समय में सबसे अधिक है।

जबसे मोबाइल फोन प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंच गया है मीडिया की पहुंच भी प्रत्येक व्यक्ति तक हो गई है। आज मीडिया द्वारा जो भी सूचना एवं ज्ञान प्रस्तुत किया जा रहा है वो समाज के प्रत्येक वर्ग तक बहुत सरलता से उपलब्ध हो जाता है। इसलिए हमारे प्राचीन ग्रंथों द्वारा प्राप्त ज्ञान को मीडिया द्वारा आगे बढ़ाने में सहयोग देना आवश्यक है।

संदर्भ –

- *रामचरित मानस – गीता प्रेस, गोरखपुर*
- *महाभारत (6 खंड) – गीता प्रेस, गोरखपुर*
- *महाभारत नवनीत – सुभाष विद्यालंकार*
- *श्रीमद्भागवत गीता– भक्ति वेदांत बुक ट्रस्ट*
- *श्रीमद्भागवत गीता भाष्य – सत्यव्रत सिद्धांतालंकार*
- *उपनिषद संग्रह – पं जगदीश शास्त्री*
- *उपनिषद एवं योग वशिष्ठ साथ – डा अक्षय गौड*
- *कल्याण वेद कथांक – गीता प्रेस, गोरखपुर*

CITATION:

Sharma, K. (2025). भारतीय महाकाव्य और नैतिक संचार. INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES, 1(2), 94–101.